जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(शुभारंभ : १५-८-१९६९) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४७ वे ❖ अंक ५ वा ❖ जानेवारी २०१६ ❖ वीर संवत २५४२ ❖ विक्रम संवत २०७२

या अंकात	पान नं.
● महावीर गाथा	१५
● मांगीतुंगी तीर्थ, नाशिक पंचकल्याणक महोत्सव	२२
● कव्हर तपशील	२४
● महामंत्र की साधना	३१
● नई चेतना, नव निर्माण	३६
● अंतर्राष्ट्रीय अनेकांतवाद दिवस	३७
● तेजकिरण	४०
● जबकि	४१
● वर्तमान है वरदान	४३
● क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद	५१
● मांसाहारी परिवार में शादी को रोकने के लिए	५९
● जिंदगी का मकसद	६०
● समझ जीने की	६१
● चाणक्याची समग्र जीवन कथा	६३
● सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे	६८
● हास्य जागृति	६९
● सन्मति तीर्थ - निबंध स्पर्धा	७९
● आत्म शुध्दि स्वास्थ्य की सर्वोच्च आवश्यकता	८३
● तृप्ति के तीर पर	८५
● मकर संक्रात स्नेहाची व आपुलकीची	८७
● संयुक्त कुटुंब या विभक्त कुटुंब	८८
● खरा नफा कोठे आहे ?	९१
● जर गेलात सिग्नल असताना लाल फास्ट	९२
● आत्मन : शुध्दिकृत् साम्यं	९२
● नया वर्ष, नया दिन, नया संकल्प	९३
● स्त्री काल आणि आज - सर्वांगीण आढावा	९६
● इंसानियत की ज्योति जलाओ	१०३
● शास्त्र सर्वत्रंग चक्षु :	१०४

● कैसे हो भय की ग्रन्थि का विमोचन? १०७
● विष को अमृत बनाने की कला ११३
● भारतीय जैन संघटना, जालना १२३
● महावीर प्रतिष्ठान, पुणे १२४
● दी पूना मर्चन्टस् चेंबर १२५
● आदिनाथ स्थानक, पुणे – दीक्षा १२७
● आकुर्डी, पुणे – दीक्षा १२७
● जैन भवन, दिल्ली – अैवार्ड १२८
● जितो पुणे – क्रिडा स्पर्धा १२९
● आजी–आजोबा मेळावा, पुणे १३०
● श्री. संतोष जैन, पुणे १३०
● उजाला करो १३१
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा – ईनाम पा १३५
● विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित

❖ पंचवार्षिक वर्गणी –१५५० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी – ९५० रु. ❖ वार्षिक वर्गणी – ३५० रु.

(बाहेरगावच्या चेकला १०० रु. जास्त) ❖ या अंकाची किंमत ४० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/on line/RTGS/AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

'जैन जागृति' – वर्गणी बँकेत भरू शकता

जैन जागृति मासिकाची वर्गणी रोखीने, मनीऑर्डरने, पुणे चेक, अॅट पार चेक, ड्राफ्टने पाठवावी किंवा **'भारतीय स्टेट बँक'** मध्ये जैन जागृति खात्यात वर्गणी भरू शकता. बँकेच्या पे स्लीपवर **'जैन जागृति'** लिहावे. बँकेचा तपशील पुढीलप्रमाणे

STATE BANK OF INDIA Branch - Market Yard, Pune.
Current A/c No. : 10521020146 IFS Code : SBIN0006117

आपण जर वर्गणी बँकेत भरली तर वर्गणी भरल्यानंतर पे स्लीपची झेरॉक्स बरोबर आपला ग्राहक क्रमांक, पूर्ण नाव, पत्ता, मोबाईल नंबर ऑफीस मध्ये पाठवावे अथवा बँकेची स्लीप स्कॅन करून E-mail : jainjagruti1969@gmail.com वर पाठवावी. ई–मेलमध्ये ग्राहक क्र., पूर्ण नाव, पत्ता, फोन, मोबाईल नंबर द्यावा म्हणजे आपल्या नावाने वर्गणी जमा केली जाईल.

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

पंचवार्षिक	१५५०/–रु.	त्रिवार्षिक	९५०/–रु.	वार्षिक	३५०/–रु.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, मो. संजयः९८२२०८६९९७ सुनंदाः९४२३५६२९९१ **www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

❖ **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९११९४०९
❖ **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
❖ **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
❖ **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
❖ **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
❖ **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
❖ **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
❖ **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
❖ **सासवड, हडपसर, पुणे –** श्री. राजेश प्रदीपजी कुवाड, मो. ९०२८५६६९७२
❖ **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
❖ **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
❖ **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
❖ **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
❖ **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
❖ **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
❖ **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१
❖ **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
❖ **मुंबई** खारघर– श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
❖ **धनसोली, नवी मुंबई –** श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८८६८५
❖ **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
❖ **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
❖ **बीड –** श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
❖ **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
❖ **श्रीरामपूर** –श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
❖ **लासलगाव –** श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
❖ **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
❖ **अंमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
❖ **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
❖ **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
❖ **कुर्डुवाडी, जि. सोलापूर–** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३०००००८१
❖ **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
❖ **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
❖ **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२५४२२५३
❖ **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

।। महावीर गाथा ।।

उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. *(क्रमशः)*

चमरेन्द्र का उपसर्ग

प्रभु की साधना को ग्यारह वर्ष हो रहे थे । प्रभु कौशाम्बी नहीं पहुँचे थे । मैथिली गाँव भी नहीं पहुँचे थे। सुंसुमारपुर नगर में प्रभु ध्यान में लीन थे । संगम देवता विदा हो गया था । छह महिने की एक अनूठी यात्रा पूर्ण हो गई थी । सुंसुमारपुर नगर में प्रभु फिर महाप्रतिमा की साधना में तल्लीन थे । चमर चंचा राजधानी में चमरेन्द्र का जन्म हुआ । जैसे ही चमरेन्द्र का जन्मोत्सव होता है वह अपने अवधिज्ञान में देखता है कि कौन-कौन, कहाँ-कहाँ हैं । चमरेन्द्र को अपने सिर पर, सिंहासन के ऊपर, उर्ध्वलोक में सौधर्म इन्द्र का विमान नजर आता है । वह देखता है कि सौधर्म इन्द्र अप्सराओं के साथ नृत्य कर रहा है । चमरेन्द्र को क्रोध आ जाता है कि यह मेरे सिर पर बैठने वाला कौन ? आदमी अज्ञान में, मोह में मान लेता है कि मैं सर्वोपरि हूँ । मुझसे ऊपर कोई नहीं हो सकता । आदमी नहीं जानता कि जब तक संसार में है उन्नीस ही होना होगा। कोई और भी इक्कीस हो सकता है । सेर को सेवा सेर मिलता ही है । चमरेन्द्र आवेश में आ गया, क्रुध्द हो गया मेरे से ऊपर कोई क्यों ? ये कौन दुष्ट है जो मेरे सिर पर बैठा हुआ है ? परिषद् बैठी हुई थी । उसके सामानिक बैठ हुए थे । सभा में पुराने अनुभवी देवता बैठे हुए थे । उन्होंने कहा कि आप हमारे इन्द्र हैं और ऊपर सौधर्म इन्द्र हैं । चमरेन्द्र ने पूछा, मेरे ऊपर वो ? देवताओं ने कहा, हाँ वो । ये शाश्वत व्यवस्था है, जो जितना मूल्य चुकायेगा वही जगह उसे मिलेगी । आपने जो मूल्य चुकाया वह जगह आपको मिली । हमने जो मूल्य चुकाया वह जगह हमें मिली । उन्होंने हमसे अधिक मूल्य, कीमत चुकायी इसलिये उन्हें उर्ध्वलोक में जगह मिली । यहाँ तो वही मिलती है जिसका मूल्य आप चुकाते हैं । बिना कीमत चुकाये कुछ नहीं मिलता है । चमरेन्द्र ने कहा, मेरे ऊपर कोई और हो, ये बात मुझे स्वीकार नहीं है । ये उसकी उद्दंडता है, दुष्टता है । मैं उसे इसका दण्ड दूँगा । अहंकारी चुनौती देता है । उन्माद में आकर चुनौती देता है । चमरेन्द्र को मित्रों ने समझाने का प्रयास किया । मित्रों ने कहा - 'स्वीकार कर लो उसकी सत्ता को । आप दंड नहीं दे सकते क्योंकि उसका कोई अपराध नहीं है । पहले के इन्द्र ने भी इस व्यवस्था को स्वीकार किया था । आप भी कर लें ।' चमरेन्द्र ने कहा - 'उसमें ताकत न होगी। वो कायर होगा । वो डरपोक होगा । मैं इस प्रकार के अपमान को, अत्याचार को सहन नहीं कर सकता ।

इससे पहले भी बात आयी थी कि दो व्यक्ति कभी नहीं समझते । एक अहंकारी, दूसरा भक्त । इन दोनों को समझाना बहुत मुश्किल है । अहंकार, यथार्थ को सत्य को स्वीकार नहीं करने देता ।

अहंकार का कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि अहंकार भ्रान्ति के बल पर टिकता है । अहंकार, सच्चाई के बल पर कभी जिंदा नहीं रह सकता । जिस दिन झूठ चला जाएगा अहंकार रहेगा या नहीं ? अहंकार न होगा तो तिरस्कार कहाँ रहेगा ? चमरेन्द्र स्वीकार नहीं कर पाता सौधर्म इन्द्र की सत्ता । चमरेन्द्र बनता ही वही है जो अज्ञान के बल पर, शरीर के बल पर तप, साधना करता है । 'प्रणामी प्रवज्या', जो दिखे उसे ही प्रणाम कर लेना। चमरेन्द्र ने मनुष्य के भव में यही प्रवज्या स्वीकार की । यह साधना जिसने की, वह गया अहंकार में ।

वंदन करते समय यह अहंकार न आने देना कि मैं कितना समर्पित हूँ ।

चमरेन्द्र जाना चाहता है सौधर्म इन्द्र के दरबार में, लेकिन ताकत नहीं है जाने की । न ही कोई रास्ता दिख रहा है । एक पुरोहित से पूछता है । पुरोहित उपाय बताता है । अहंकारी को भी उपाय मिल जाता है, भक्तों को भी उपाय मिल जाता है ।

एक उपाय होता है जो सारे अपायों को दूर कर देता है और एक उपाय होता है जो अपायों को आमंत्रण दे देता है ।

पुरोहित बताता है – 'जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में कोई महाश्रमण, कोई तीर्थंकर साधना में लीन हो और उसका आलम्बन आपको मिल जाये तो आप सौधर्म इन्द्रलोक जा सकते हैं । चमरेन्द्र अपने अवधिज्ञान से देखता है, श्रमण महावीर, साधना कर रहे है । चमरेन्द्र वहाँ पहुँचता है । तीन बार प्रदक्षिणा करता है । चरणों में प्रणाम करता है और कहता है – 'प्रभु ! मैं आपका आलम्बन लेकर सौधर्म इन्द्र को उसके अपराध की सजा देने जा रहा हूँ । आप मेरे त्राता हैं । आप मेरे रक्षक हैं ।' प्रभु तो ध्यान में तल्लीन थे, न हाँ कहा, न ना कहा। प्रभु का आलम्बन लेकर वह पहुँच जाता है, सौधर्म इन्द्र के दरबार में । जो उसका सामर्थ्य नहीं, जो उसकी क्षमता नहीं जो उसकी योग्यता नहीं, लायकी नहीं, वह शक्ति उसे मिल जाती है । सिर्फ आलम्बन से । कोई तप किया नहीं, कोई माला गिनी नहीं ।

भक्तामर-प्रणत-मौलिमणि-प्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलित-पाप-तमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।।

जिनेश्वर की सारी साधना का सूत्र एक ही है – 'आलम्बन' ।

वरदान उतना ही मिलता है, जितना तुम तप करते हो । जितनी योग्यता होगी उतना ही वरदान मिलेगा । अभिशाप उतना ही मिलता है जितनी दुष्टता करते हो । लेकिन प्रभु का आलम्बन लेकर यदि आराधना करते हो तो जिसके योग्य नहीं हो वह मिल जाता है । जो माँगा नहीं वह भी मिल जाता है । अरे ! झोली में दान देने का क्या ? प्रभु तो झोली भी दे देते हैं । ये फलिभूति है आलम्बन की ।

चमरेन्द्र में सामर्थ्य नहीं था फिर भी पहुँच जाता है सौधर्म इन्द्र के सामने । संगीत, नृत्य चल रहा है । सौधर्म का तेज देखते ही चमरेन्द्र को कंपकंपी छूट गई । चमरेन्द्र जानता है कि वह स्वयं के बल पर नहीं, दूसरे के बल पर यहाँ आया है । लेकिन ये कुटिल अहंकार... बहुत बडा है ये । हारना नहीं जानता । चमरेन्द्र कहता है – 'हे अधमतम ! मेरे सिर पर बैठकर तू यहाँ रंगरेलियाँ मना रहा है । मैं तुझे यहाँ दंड देने आया हूँ ।' सौधर्म देखते हैं, कौन आ गया आज यहाँ ? सारी सभा देखती है । आज तक कोई आ न सका यहाँ तक । इस भाषा में बोलने वाला ये कौन आया है आज यहाँ ? जो भी यहाँ आता है वह आदर व्यक्त करता हुआ आता है, भक्ति के साथ आता है । ये अशिष्ट कौन है ? सौधर्म ने देखा, चमरेन्द्र है । सौधर्म को हँसी आ गई । सौधर्म ने कोई जवाब नहीं दिया । उसने बस वज्र उठाया और चमरेन्द्र की ओर फैंक दिया । चमरेन्द्र भागा... । भगवती सूत्र के शब्द हैं – 'अहो सिर उद्धम पायम' नीचे सिर और ऊपर पैर करके भागा । चमरेन्द्र सब भूल गया और दौड पडा । पीछे-पीछे वज्र और आगे-आगे चमरेन्द्र । बडी ही तीव्र गति से, आशु गति से भागता रहा । उसने सोचा, बस प्राण बच जाएँ । चमरेन्द्र छोटा सा आकार बनाकर, प्रभु के चरणों के नीचे जा छिपा। इतना छोटा आकार बना लेता है चमरेन्द्र कि दिखता तक नहीं ।

यह अहंकार जब चाहे तब छोटा बन जाता है और जब चाहे तब बडा बन जाता है । पूछो मत इसकी लीला? इसका यदि उद्देश्य पूरा होता है तो यह दीन बन जाता है अन्यथा रावण बना रहता है ।

सौधर्म देखता है, यह आया कैसे ? ऐसे तो यहाँ

आ नहीं सकता । इसकी क्षमता इतनी तो नहीं कि यहाँ आ सके । ये किसी का आलम्बन लेकर ही यहाँ आया होगा ? सौधर्म दौडा... । देखा... चमरेन्द्र प्रभु के चरणों में छिपा बैठा है । मेरा फेंका हुआ वज्र कहीं प्रभु के चरणों को आघात न पहुँचा दे, प्रभु के चरणों से चार अंगुल दूर पर ही सौधर्म ने उसे पकड लिया ।

सौधर्म प्रभु से निवेदन करता है – 'प्रभु ! मुझे पता नहीं था कि ये चमरेन्द्र आपका आलम्बन लेकर आया है और अब ये आपकी शरण में है । मैं भी इसे अभयदान देता हूँ ।'

सौधर्म, चमरेन्द्र दोनों अपनी-अपनी नगरी में लौट जाते हैं ।

जो प्रभु को आलम्बन ले लेते हैं त्रिजगत उन्हें अभय का वरदान दे देते हैं ।

आलम्बन की साधना करें । आलम्बन लें जिनेश्वर का, तीर्थंकर का, महावीर का, परमात्मा का । क्या धन का आलम्बन, क्या सत्ता और सम्पत्ति का आलम्बन क्या तन का आलम्बन ? देखिये कथा महावीर के जीवन की । आलम्बन की महिमा का वर्णन भगवती सूत्र में विस्तार से किया गया है । भक्तामर स्तोत्र के शुरुआत में केवल आलम्बन की चर्चा है । प्रभु का आलम्बन जो ले लेता है उसको सामर्थ्य मिल जाता है। एक देवता का आलम्बन लेना हो तो वासुदेव, चक्रवर्ती को भी तेला करना होता है । देखो ! तीर्थंकर के वरदान, तीर्थंकर का वात्सल्य, जो यूँ ही उपलब्ध है । प्रभु किसी को छोडते नहीं, हम चाहे प्रभु को छोड दें ।

आलम्बन रस्सी है । हमको पकडनी है । रस्सी स्वयं आपके हाथों में आती भी नहीं, रस्सी आपको छोडती भी नहीं । पकडती है ? आपने पकडी तो रस्सी इनकार भी नहीं करती । कोई कीमत, कोई मूल्य भी नहीं चुकाना पडता । केवल पकडे रहो रस्सी को । लेकिन यदि रस्सी टूट गई तो कहाँ गिरोगे कुछ पता नहीं चलेगा?

'आलम्बन लेने के लिये न तो आराध्य की स्वीकृति लगती है न सहमति लगती है । केवल हमारा लेने का सामर्थ्य लगता है ।'

ये महागाथा इसलिये सुना रहे हैं कि कदम-कदम पर महावीर का आलम्बन उपलब्ध हो जाये । कदम-कदम पर महावीर का सहारा मिल जाये । जिसको प्रभु का सहारा मिल जाता है वह जिंदगी में कभी बेसहारा नहीं होता ।

वसुमति बनी चंदनबाला – भगवत्ता की प्राप्ति

वसुमति ने जैसे ही खबर सुनी कि वर्धमान ने माता पिता को कृतज्ञता ज्ञापित कर रही, भरी सभा के बीच दीक्षा लेने की घोषणा कर दी है वह विस्मित हो जाती है । अभी आँखों के आँसू सूखे भी नहीं और वर्धमान ने दीक्षा की बात शुरु कर दी ! हिल गई वसुमति । कैसा नि:संग है ये वर्धमान ?

जसोदा पर क्या बीत रही है यह जानने के लिये वह पहुँच जाती है जसोदा के पास ।

वसुमति जसोदा से पूछती है – ''वर्धमान ने दीक्षा की घोषणा कर दी, तुझसे पूछा या नहीं ? तुझे विश्वास में लिया या नहीं ?''

जसोदा कहती है – ''मैं उनके विश्वास की पात्र बनी हूँ, इतना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है । वो मेरे श्रध्दा के पात्र बने रहें ये ही मेरा अरमान है । मेरे श्रध्देय हैं वो, मेरे नाथ हैं वो ।''

वसुमति – ''तेरे नाथ तुझे अनाथ करने की घोषणा कर रहे हैं ।''

जसोदा – ''नहीं वसुमति ! मेरे नाथ किसी को अनाथ नहीं कर सकते । वे तो अनाथ के नाथ बनते हैं। किसी को अनाथ नहीं करते ।''

वसुमति – ''वो दीक्षा ले लेंगे, तेरा क्या होगा?''

जसोदा – ''इसकी चिंता तू मत कर वसुमति ।''

वसुमति जसोदा को नहीं समझ पा रही है और जसोदा वसुमति को नहीं समझ पा रही है ।

वसुमति ने जसोदा की आँखों में झाँककर देखा । वहाँ वसुमति को कोई पीडा, कोई गिला-शिकवा, कोई क्रंदन, कोई भूकंप, कुछ नजर नहीं आया । वहाँ तो भक्ति का, श्रध्दा का सागर लहरा रहा था ।

वसुमति पूछती है - ''कैसे तूने इतनी बडी खबरी झेल ली, जसोदा !''

जसोदा कहती है - ''उन्होंने मुझे जसोदा बने रहने को कहा है । उन्होंने मुझे यशदात्री, बनने का मंत्र दिया है और मैं उसी मंत्र की साधना कर रही हूँ । मैं कोई और नहीं हो सकती। मुझे जसोदा ही रहना है ।''

वसुमति फिर जसोदा के भाग्य पर ईर्ष्या करती है। उसको मंत्र दिया वर्धमान ने । जसोदा को यशदात्री बनने का वरदान दिया ।

सभा समाप्त होने पर वर्धमान लौट रहे हैं । वसुमति उनसे कहती है - ''तुमने जसोदा को मंत्र दिया, यशदात्री बनने का । मुझे तुम इस तरह कब मिलोगे ?''

वर्धमान उस समय बहुत तरंगायित अवस्था में थे। उन्होंने कहा - कोई न होगा तेरे पास तब तू पुकारेगी, मैं चला आऊँगा ।

वसुमति ने कटाक्ष करते हुए कहा - ''जब तक मेरे पास कोई है तुम नहीं आओगे । सब कुछ छिन जाएगा तभी तुम आओगे ?'' और ये सच है -

'भगवत्ता तभी उपलब्ध होती है, भगवान प्रभु तभी मिलते हैं जब सारा संसार छूट जाता है । अंतर्मन में संसार रहते हुए भगवत्ता कभी नहीं मिलती । संसार जब शून्य हो जाता है तभी भगवत्ता के दर्शन होते हैं, भगवत्ता की अनुभूति होती है ।'

चंपा लुटी । वसुमति लुटी ।

वसुमति सोचती है, मुझे भी मंत्र मिला था जसोदा की तरह । मुझे भी एक अधिकार मिला था पुकारने का और मैं पुकारुंगी... लेकिन पुकारने की परिस्थितियाँ कैसी आई ।

वर्धमान श्रमण बन चुके हैं । विहार कर रहे हैं । कौशाम्बी के आसपास ही । सुना उन्होंने कि चंपा लुटी गई है । रानी की मृत्यु हो चुकी है । वसुमति दासी बनी है और वर्धमान ढूँढते-ढूँढते पहुँच जाते हैं चंदना बनी वसुमति के पास । चंदना के हाथों दीर्घ एवं १३ बालों के अभिग्रह के साथ की गयी तपस्या का पारणा करते हैं ।

कुछ समय बाद चंदनबाला दीक्षित होती है ।

तीर्थ की स्थापना होने पर प्रभु महावीर चंदनबाला को साध्वी संघ की प्रमुख आर्या बनाते हैं ।

भायल एवं ग्वाले के उपसर्ग

कौशाम्बी से चंदना के हाथों पारणा करके प्रभु विहार कर रहे थे । पालक गाँव की ओर जा रहे थे । पालक गाँव की ओर जाते समय रास्ते में भायल नाम का एक व्यापारी अपने सार्थवाह के साथ, पूरे काफिले के साथ जा रहा था । यात्रा का प्रारम्भ करने जा ही रहा था कि उसने दिगम्बर वर्धमान को सामने आते देखा । मुंडित सिर, दिगम्बर काया । आक्रोश आ गया उसे । यात्रा प्रारम्भ करते ही अपशकुन हो गया । दिगम्बर काया सामने आ गई । ये अपशकुन होते हैं और ब्राह्मण ग्रंथों में ये लिखा है । रोष में आकर उसने तलवार ली और दौड पडा ताकि वह अपशकुन को काट दे, उसे समाप्त कर दे ।

अरे ! वो प्रभु जिनकी आराधना करके सारे अपशगुन, शगुन बन सकते थे, सारे अमंगल टल सकते थे, अमंगल मंगल में बदल सकते थे, उन्हीं प्रभु की ओर वह नादान तलवार लेकर दौडा । नादानी, मुर्खता का कोई क्या करे ? नादानी मंगल को भी अमंगल में बदल देती है । प्रभु को किसी से दुश्मनी नहीं । प्रभु किसी का अपशगुन नहीं करते ।

जैसे ही वह तलवार लेकर दौडता है ठोकर

खाकर गिरता है और अपनी ही तलवार से उसकी गर्दन कट जाती है ।

जिसने प्रभु को अमंगल माना, अमंगल का फल पाया ।

जिसने प्रभु को मंगल माना, मंगल का फल पाया।

जिनभद्र क्षमाश्रमण कहते हैं - 'मंगल बुध्दि परिग्रह मंगलम' मंगल बुध्दि से जिसका परिग्रह होता है वह मंगल का कार्य करता है । अमंगल बुध्दि से जिसका परिग्रह होता है वह अमंगल का कार्य करता है ।'

प्रभु के साधना काल में प्रसंग आता है कि एक लोहारशाला में प्रभु अवग्रह लेकर साधना में लीन हो गये । लुहार को पता नहीं था कि श्रमण वर्धमान वहाँ साधना कर रहे हैं । वह लुहार रोग शय्या से उठकर उसी दिन अपनी लोहारशाला में काम करने आया था । बीमारी के कारण चिडचिडा हो गया था । लम्बे समय बाद आज शाला पर आया हूँ और ये दिगम्बर सामने मिल गये, अपशगुन हो गया, उसके मन में इस तरह के भाव आये । उसने बिना सोचे-समझे हथौडा उठाया और श्रमण की ओर बढा । श्रमण का मस्तक चूर-चूर कर दूँगा । न उसे किसी देवता ने रोका न ही प्रभु ने । नादानी में वह क्या करने जा रहा था स्वयं उसको पता न था । उसका हथौडा उसके ऊपर ही गिर जाता है । प्रभु ने कभी न सोचा था कि उसका हथौडा उसके ऊपर गिरे, लेकिन ऐसा हो गया ।

व्यक्ति की दुष्टता ही व्यक्ति का अनिष्ट कर देती है । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि, निन्दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इस प्रकार ही दुष्टता को हमेशा वोसिरा देना चाहिए ।

श्रमण वर्धमान की साढे बारह वर्ष चलने वाली इस साधना में जघन्य उपसर्ग कठपूतना का आया ।

शूलपाणि, संगम, चण्डकौशिक, लोहार, भायल-इनका पिछले भव का कोई वैर नहीं था प्रभु से । इसी जन्म की, इसी भव की नादानियाँ थी । संगम का उपसर्ग भी मध्यम कोटि का था ।

उत्कृष्ट कोटि का जो उपसर्ग प्रभु के साधना काल में आया वह था ग्वाले का उपसर्ग । कानों में कीले ठोकने का । ग्वाला, गोपालक, गोपाल । गो यानि इन्द्रियाँ । इन्द्रियों का पालन करने वाला । जो इन्द्रियों के वशीभूत होकर प्रभु को कष्ट दे । जो इन्द्रियों का पालन करते हुए प्रभु को उपसर्ग देता है उससे उसकी प्रभुता रुठ जाती है । ग्वाला और गौशालक, इनको प्रभुता विदा कह गई ।

प्रभु का भक्त वही होता है जो गोस्वामी बनता है, जो गौतम बनता है, जो इन्द्रभूति बनता है । जो इन्द्रियों को ही नहीं संभालता, इन्द्र को भी संभालता है । इन्द्र यानि ऐश्वर्य । ऐश्वर्य और कल्याण की भावना लेकर जो जीवन में चलता है वह गौतम होता है । जो इन्द्रियों के पालन में रहता है वह तो राहु-केतु बन जाता है ।

प्रथम और अंतिम, दोनों उपसर्ग ग्वाले ने दिये, प्रभु को ।

साधना के बारह वर्ष पूरे हो चुके हैं । प्रभु ध्यान में लीन हैं और ग्वाला जब देखता है श्रमण महावीर को तो ग्वाले का वैर जागृत होता है और कानों में कीले ठोके जाते हैं । कितना क्रूरतम लगता है दृश्य लेकिन जब वैर के रिश्ते जागृत होते हैं तो ऐसा ही होता है ।

एक रिश्ता होता है वैर का, एक होता है प्यार का, स्नेह का, मैत्री का । दोनों रिश्ते जन्म-जन्मांतर तक चलते हैं । दोस्ती का रिश्ता चलता है तो व्यक्ति तीर्थंकर का गणधर बनता है । दुश्मनी का रिश्ता चलता है तो कानों में कीले ठोके जाते हैं ।

जिम्मेदारी किसकी ? ग्वाले की ?

बीज किसने बोया था ? श्रमण महावीर की चेतना ने ?

बीज शय्यापालक ने बोया, कर्तव्य भंग करके ।

बीज फल और उसे काटा शय्यापालक ने इस जन्म में तीर्थंकर की आशातना करके । तीर्थंकर की आशातना से बढकर क्या पाप होगा ? एक कर्तव्य भंग करके उसने कितने कर्तव्य भंग किये ? पता ही न चला उसे।

राजा किसी अपराधी को माफ कर दे तो राजा नहीं रहता और साधु किसी अपराधी को दंड दे दे तो वह साधु नहीं रहता ।

भूलकर भी मत सोचना कि ग्वाले ने दुश्मनी का बदला लिया । कहाँ ले पाया बदला ? बदला लेता तब, जब वह प्रभु की सेवा करता ?

वासुदेव के भव में मौका मिला था शय्यापालक को प्रभु से जुडने का । उस समय, उस पल प्रभु से जुड जाता तो इन्द्रभुति बन सकता था, सुधर्मा बन सकता था । तीर्थंकर के भव में फिर मौका मिला प्रभु से जुडने का लेकिन नहीं जुड पाया । वह अपनी आदत से मजबूर था । पहले भी कर्तव्य भंग किया और फिर दुबारा कर्तव्य भंग किया । इस बार तो दुष्टता का सेवन किया। कोई साधक, साधना में तल्लीन हो, उस समय उस साधक से, कोई अपने पशुओं का ध्यान रखने को कहेगा भला ? साधु को कोई पशु सौंपने का दायित्व देगा भला, उस समय वह भी जब वह ध्यान में बैठा हो? पहला नियम भंग किया । पहला कर्तव्य भंग किया । पहले आक्षेप, फिर आक्रमण और फिर अत्याचार । कानों में कीलें ठोकी गई । आगमकार कहते हैं – 'साढे बारह वर्ष की साधना में श्रमण वर्धमान को चाहे कितने भी उपसर्ग, परीषह, कष्ट आये, प्रभु को कभी संवेदना नहीं हुई । पहली बार, पहली बार जैसे ही कान में कीलें ठोकी गई श्रमण वर्धमान के मुँह से चीत्कार निकली, एक शब्द उच्चारित हुआ, माँ... ! अंतिम उपसर्ग प्रभु के साधना काल का, छद्मस्थ अवस्था काल का, जीवन का ।

कीलें निकाली जाती हैं । सेवा करने वाले भी मिल जाते हैं । वे भी पुण्य का बंध कर लेते हैं ।

(क्रमश:) ●

आपल्या जीवलगांना गिफ्ट द्यायचं ?

मग असं गिफ्ट द्या. जे इतर गिफ्टमध्ये उठून दिसेल ज्याला ते द्यायचंय त्याला ते एक दिवस नाही तर तब्बल वर्षभर प्रत्येक महिन्याला मिळत राहील. अन तेही फक्त अल्प रूपयांत अगदी घरपोच.

तुम्ही फक्त इतकंच करा. ज्यांना गिफ्ट द्यायचंय त्यांच्या नावे जैन जागृति मासिकाची
● वार्षिक वर्गणी रु. ३५०/- ● त्रिवार्षिक वर्गणी रु. ९५०/- ● पंचवार्षिक वर्गणी रु. १,५५०/-
आमच्याकडे भरा. त्यानंतर जैन जागृति मासिकाचे अंक घरपोच पाठविण्याची जबाबदारी आमची.

'जैन जागृति'ची भेट अशी वर्षभर आठवणीत राहील जशी !

जैन जागृति
जैन समाजाचं मासिक

६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे ४११ ०३७.
फोन : २४२१५५८३, २४२१७८५० मोबा. : ९८२२०८६९९७
● jainjagruti1969@gmail.com ● www.jainjagruti.in

वर्गणी व जाहिरात - रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS / Online
'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

१०८ फूट उंच भगवान ऋषभनाथांच्या अद्‌भुत, अनोख्या व भव्य मूर्ती निर्मितीच्या कार्यास अभिवादन !

'पूज्य ज्ञानमती माताजींनी करवियले...

११ ते १७ फेब्रुवारी २०१६ पंचकल्याणक महोत्सव, मांगीतुंगी तीर्थ, नाशिक.

प्रेषक : प्रा. डॉ. रावसाहेब पाटील, सोलापूर

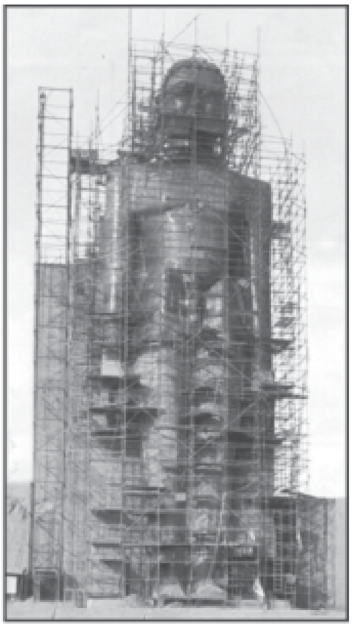

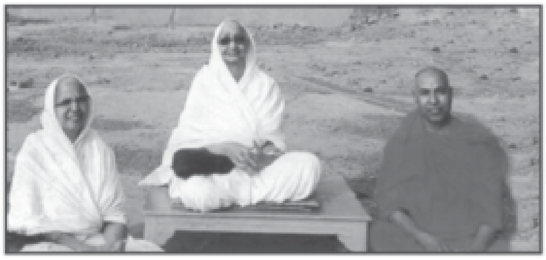

जैन धर्मियांचे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेवाची १०८ फूट उंचीची जगातील सर्वांत उंच मूर्ती नाशिक जवळील मांगीतुंगी या पहाडावर साकार झाली आहे. ११ ते १७ फेब्रुवारी २०१६ पर्यंत संपन्न होणाऱ्या या महामूर्तीच्या पंचकल्याणक महोत्सवात देशाचे पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांच्या हस्ते या ऐतिहासिक मूर्तीचा महामस्तकाभिषेक करुन लोकार्पण करण्यात येणार आहे.

नाशिक जवळील सटाणा जिल्ह्यातील मांगीतुंगी हे अजस्त्र पहाड जैन धर्मियांचे प्राचीन सिध्दक्षेत्र असून येथे रामायण व महाभारत कालीन जैन पुरावे आढळतात. हरीयाणातील हस्तिनापूर या जैनांच्या प्राचीन क्षेत्रावर ज्यांनी जैन भूगोलाचे दर्शन घडविणाऱ्या त्रिलोक तीर्थाची निर्मिती केली व ज्यांनी भारताच्या जैन समाजात अभूतपूर्व कार्य केले त्या गनिणीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजींचा १९९३ चा चातुर्मास या मांगीतुंगी क्षेत्रावर मोठ्या प्रभावनेसह संपन्न झाला होता. हे क्षेत्र जैन धर्मियांच्या दृष्टीने महत्त्वाचे असून त्याची ख्याती जगात व्हावी म्हणून येथे १०८ फूट उंचीची महाकाव्य मूर्ती निर्माण करण्याचा संकल्प त्याच वेळी त्यांनी जाहीर केला.

या पहाडावर काही निर्मिती करावयाची तर त्यासाठी हा पहाड ज्या महाराष्ट्र शासनाच्या वनखात्याच्या ताब्यात होता त्या वन विभागाची परवानगी मिळवणे हे महत्त्वाचे काम होते. हे काम अवघड व किचकट काम होते. पैठण येथील पूज्य माताजींचे परम भक्त डॉ. पन्नालाल पापडीवाल व स्व. आमदार जयचंद कासलीवाल यांनी सरकार दरबारी सतत पाठपुरावा करुन पूर्ण केले. जवळ जवळ सहा वर्षाच्या दीर्घ प्रयत्नानंतर ही वनखात्याची परवानगी मिळविण्यात १९९९ साली यश आले. त्यानंतर या ऐतिहासिक कार्यास प्रारंभ झाला.

प्रारंभीचा मूर्ती निर्माणाचा आराखडा सांगली येथील अभियंता सी.आर.पाटील यांनी तयार केला. आवश्यक असणाऱ्या प्रचंड आर्थिक गरजेच्या परिपूर्तीसाठी ज्ञानमती

माताजी विश्वातील त्यांच्या शिष्य वर्गाला आवाहन केले. पूज्य माताजींच्या आवाहनाला प्रतिसाद देत जगभरातील ज्ञात-अज्ञात संस्कृती व कला प्रेमींनी या महान कार्यासाठी योगदान दिले व या मूर्तीच्या निर्माणाचे कार्य सुरु झाले. गत वीस वर्षापासून हे काम सुरु आहे. सर्व प्रथम संपूर्ण पहाडाचे सर्वेक्षण करुन १२१ फूट अखंड शिळा शोधण्याचे महत्त्वाचे व अवघड काम यशस्वी झाले.

त्यानंतर मूर्तीसाठी प्रत्यक्ष डोंगर कापण्याचे काम पर्यावरणास थोडाही धोका पोहचणार नाही याची खबरदारी घेण्यात आली. डोंगर कापताना-फोडताना तेथील पर्यावरणास, पशू-पक्षी-वनस्पती यांना हानी पोहोचू नये म्हणून आधुनिक तंत्र वापरण्यात आले. प्रथम डोंगरास छिद्र करुन त्यात विशिष्ठ प्रकारची चिनी माती भरण्यात आली. त्यानंतर पाण्याचा वापर करुन वायरने डोंगर कापण्यात आला. त्यामुळे कोणत्याही प्रकारचे ध्वनी प्रदुषण झाले नाही. शिवाय अल्प काळातच हे काम पूर्ण झाले. प्रत्यक्ष मूर्ती करण्याच्या कामी गेली अनेक वर्षे दीडशे ते दोनशे कारागीर व शिल्पकार आपले कौशल्य पणास लावीत असल्याची माहिती या मूर्ती निर्माण ट्रस्टचे महामंत्री डॉ. पन्नालाल पापडीवाल यांनी सांगितली. या महान कार्यासाठी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, पूज्य चंदनमति माताजी, हस्तिनापूरचे पीठाधीश रविंद्रकीर्ति स्वामीजी यांचे मार्गदर्शन, प्रेरणा व आशीर्वाद लाभले आहे. पूज्य ज्ञानमती माताजींचा संघ खास या मूर्तीच्या अंतिम निर्मितीचे कार्य उत्तम व्हावे म्हणून मांगीतुंगी क्षेत्रावर तळ ठोकून आहे.

भगवान आदिनाथ उर्फ ऋषभनाथांची ही महामूर्ती १०८ फूटाची असून ही महाकाय मूर्ती ज्या कमलासनावर उभी आहे ते पूर्ण उमलले कमळ पाच फूट उंचीचे आहे. मूर्तीची एकूण उंची १२१ फूट आहे. मांगीतुंगीलाच नव्हे तर भारतवर्षाला इतिहासात अजरामर करणारी ही निर्मिती आमच्या पीढीच्या डोळ्यासमोर होत आहे हे आमच्या पिढीचे भाग्य आहे. ●

Attn: Diabetic Patients on Medicines

Tired of taking medicines for diabetes? Then you are welcome to contact us.

Under the guidance **of P.P. PravinRushiji m.sa.,** the team of *Purushakar Parakram Dhyaan Sadhana* will be conducting research on diabetic patients who are taking medicines but are not under insulin. This, *Purushakar Parakram Dhyaan Sadhana.* is a meditation technique invented by ***P.P.* PravinRushiji m.sa** and currently widely used all over India. Research will be conducted by a team of doctors that includes diabetologist, general physician, research team, etc at the institute Vishwanand Kendra.

This institute is recognized by DSIR, Delhi. Research will be conducted as per international norms.

Training of this meditation will be free. Interested participants should contact the below given number for further details and to confirm your participation:

Mr. Prashant Bothara - 9822876489

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा
सर्वात खात्रीशीर, सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति

कव्हर तपशील - जानेवारी २०१६

❖ **मांगीतुंगी तीर्थ क्षेत्र, नाशिक**

जैन धर्मियांचे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेवाची १०८ फूट उंचीची जगातील सर्वांत उंच मूर्ती नाशिक जवळील मांगीतुंगी या पहाडावर साकार झाली आहे. ११ ते १७ फेब्रुवारी २०१६ पर्यंत संपन्न होणाऱ्या या महामूर्तीच्या पंचकल्याण महोत्सवात देशाचे पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांच्या हस्ते या ऐतिहासिक मूर्तीचा महामस्ताभिषेक करुन लोकार्पण करण्यात येणार आहे. गनिणी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी यांच्या प्रेरणेने ही मूर्ती साकार झालेली आहे.

❖ **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे**

पुणे येथील महावीर प्रतिष्ठान या वास्तु शिला लेखाचे उद्घाटन प.पू.श्री सुमतीप्रकाशजी, श्री विशालमुनीजी, श्री. आशिषमुनिजी, उपाध्याय प्रवर श्री. प्रवीणऋषिजी आदि साधूसंताच्या उपस्थितीत १ जानेवारी २०१६ रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. या प्रसंगी नववर्षाच्या निमित्त मंगलपाठाचे आयोजन ही करण्यात आले होते.

शिलालेखा समवेत प.पू. श्री सुमतीप्रकाशजी आदि ठाणाच्या सोबत महावीर प्रतिष्ठानची कार्यकारिणी - अध्यक्ष सर्वश्री जुगराज पालरेशा, कार्याध्यक्ष विजयकांत कोठारी, उपाध्यक्ष अभय छाजेड, दिपचंद पारख, खजिनदार पनालाल लुणावत, मंत्री अमोलकचंद खाटेर, सहमंत्री विजय भटेवरा, शाळा समितीचे अध्यक्ष रायचंद कुकुंलोळ, नेमीचंद कर्नावट, लखीचंद खिंवसरा, आदेश खिंवसरा, विजय लुणावत, प्रवीण चोपडा, विजय भंडारी आदी मान्यवर.

❖ **नवकार पार्क सोसायटी, खेड-शिवापूर**

पुणे येथील पार्क ऑन्स ग्रुप व प्रिव्हीलेज प्रॉपर्टीज् यांच्यातर्फे खेड शिवापूर, पुणे येथे भव्य नवकार पार्क सोसायटी निर्माण केली जात आहे. या नवकार पार्क सोसायटीत श्री मुनिसुव्रतस्वामीचे शिखरबध्द जैन मंदिराचा शिलान्यांस समारोह आचार्य श्री विजय विश्वकल्याण सुरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा यांच्या निश्रेत १३ डिसेंबर २०१५ रोजी संपन्न झाले. यावेळी अनेक मान्यवर उपस्थित राहून श्री आनंदरामजी मुथा, श्री. पराग मुथा, श्री. सचिन जाधव यांना शुभेच्छा दिल्या.

❖ **श्री आदिनाथ स्थानक, पुणे - दीक्षा**

श्री आदिनाथ स्थानक पुणे येथे २५ डिसेंबर २०१५ रोजी दीक्षार्थी स्पर्श जैन व सिध्दी जैन यांची दीक्षा भव्य समारंभात संपन्न झाली. या दीक्षा महोत्सवास भीष्म पितामह प.पू. श्री सुमती प्रकाशजी, श्री विशालमुनिजी, श्री प्रवीणऋषिजी, श्री रविंद्रमुनिजी, श्री पारसमुनिजी आदि ठाणा, वाणीभूषण श्री प्रीतिसुधाजी आदी साध्वी गण सुमारे १४० साधू साध्वींचे सान्निध्य लाभले. संघाचे अध्यक्ष श्री. संजय साकला यांनी सर्वांचे स्वागत केले.

❖ **आकुर्डी, पुणे - दीक्षा**

आकुर्डी, पुणे येथे दीक्षार्थी बंधू श्री. लोकेशजी यांची दीक्षा १३ डिसेंबर रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाली. या दीक्षेस आचार्य श्री जिनरत्न सुरीश्वरजी, उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी, उपाध्याय श्री रविंद्रमुनिजी, श्री रमणिकमुनिजी, श्री मणिभद्रजी, श्री प्रीतिसुधाजी, श्री अर्चनाजी आदी ९० साधू-साध्वींचे सान्निध्य लाभले. यावेळी संघातर्फे सन्मान करण्यात आला.

❖ **दी पूना मर्चन्ट चेबर – श्री. शरद पवार सत्कार**

दी पूना मर्चन्ट चेंबरच्या वतीने अमृत महोत्सव वर्षानिमित्त श्री. शरदजी पवार यांचा विशेष सन्मान करण्यात आला. यावेळी श्री. शरद पवार यांना मानपत्र देताना चेंबरचे अध्यक्ष श्री. प्रवीणजी चोरबेले, महापौर श्री. दत्तात्रय धनकवडे, श्री. राजेंद्रजी बाठिया, श्री. वालचंदजी संचेती, श्री. पोपटलालजी ओस्तवाल इ. मान्यवर.

❖ **श्री. संतोषजी जैन, पुणे**

पुणे येथील युवा उद्योजक व संतोष स्टीलचे संचालक श्री. सतीशजी जैन यांना श्री विजयवल्लभ शाळेतर्फे ''प्राईड ऑफ आचार्य श्री विजयवल्लभ पुरस्कार'' देऊन सन्मानित करण्यात आले. श्री. संतोषजी जैन यांना पुरस्कार देताना विजयवल्लभ शैक्षणिक कमिटीचे अध्यक्ष श्री. सुभाषजी परमार, प्राचार्या माधवी देसाई, मंगला जैन इ. मान्यवर.

❖ **भारतीय जैन संघटना जिल्हा, जालना**

भारतीय जैन संघटना जिल्हा जालनाच्या वतीने जिल्ह्यातील ३८ आत्महत्या ग्रस्त शेतकऱ्यांची प्रत्येक गावात जाऊन भेटून सांत्वना केली व त्या कुटुंबाचे दुःख, दर्द जाणून संकटात सापडलेल्या परिवाराची मुले, मुली त्यांचे पुढील शिक्षणासाठी पाचवी ते बारावी पर्यंत संघटनेचे पुणे येथील शैक्षणिक प्रकल्पात प्रवेश देण्यासाठी जालना येथे आणले. त्या मुलांना पुण्याकडे जाण्याकरिता निरोप समारंभ दि. १ डिसेंबर २०१५ रोजी जैन भवन, जालना येथे आयोजित करण्यात आले. या कार्यक्रमास संघटनेचे संस्थापक श्री. शांतीलालजी मुथा, जालन्याचे आमदार श्री. अर्जुनराव खोतकर, जिल्हाधिकारी श्री. एस्.आर. नायक, उपजिल्हाधिकारी राज्यप्रभारी श्री. हस्तीमलजी बंब, जिल्हाध्यक्ष शितल लुंकड, शहर अध्यक्ष प्रकाश बोरा मंचावर उपस्थित होते. ●

गोल्डन डायरी

लेखक : आचार्य श्री महाबोधीजी म.सा.

गुरु भगवान आहे

अजैनशास्त्रांमध्ये गुरुतत्वाच्या महत्तेला समजावणारा एक मजेशीर श्लोक आहे.

'गुरूब्रम्हा गुरूर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वरा
गुरु: साक्षात् परब्रम्ह तस्मै श्रीगुरवे नम :।।'

त्यांच्या मते, गुरु म्हणजे ब्रम्हा,
गुरु म्हणजे विष्णु आणि
गुरु म्हणजे महेश

ब्रम्हाचं मुख्य काम आहे निर्माण करणं, विष्णुंच मुख्य कर्तव्य आहे रक्षण करणं आणि महेशचं काम आहे संहार करणं. म्हणजे ब्रम्हा निर्माता आहे, विष्णु रक्षक आहे आणि महेश संहारक आहे.

गुरुतत्त्वात जर या तिन्ही गोष्टी सामावून घ्यायच्या असतील तर त्या अशाप्रमाणे सामावून घेता येतात. गुरु ब्रम्हा आहे. कुंभार ज्याप्रमाणे हात मारुन मारुन घड्याच निर्माण करतात त्याप्रमाणे गुरु शिष्याला सुधारुन-सुधारुन अगदी परमात्मा बनवतात.

म्हटलं आहे...

'गुरु कुंभार शिष्य कुंभ घडी घडी काढे खोट ।
भीतर हात संवार के उपरसे लगावे चोट ।।'

गुरु विष्णु आहे. शिष्य कशाप्रकारे जास्तीत जास्त गुणवान बनेल असा प्रयत्न करतो आणि जे गुण आहेत ते टिकवून ठेवून त्याचं रक्षण करण्याची काळजी घेत असतो.

गुरु महेश आहे. शिष्याला संसारापासून मुक्त करुन अगदी मोक्षात पोहचवण्यासाठी आडव्या येणाऱ्या दोषांचा संहार (नाश) करण्यात निमित्त बनत असतो. असे गुरु म्हणजे साक्षात भगवान.

अशा गुरुला कोटी-कोटी वंदन असो. ●